सवेरा - एक बिम्ब

चिड़िया के कंधों पर
बैठकर
आया है सवेरा
सवेरे ने भी
पंख फैलाये
दूर क्षितिज पर
छा गया सवेरा
घर घर में
उसने दस्तक दी
स्वागत गीत
गूंजने लगे
धरती से आसमान तक
आओ सवेरे
नदी नदी की लहरों पर
लहराओ सवेरे !
पूरब से पश्चिम तक
उत्तर से दक्षिण तक
अपनी विजय पताका
फहराओ सवेरे !
आओ सवेरे !

-दुर्गाप्रसाद झाला

जय शारदे!

जय शारदे, जय शारदे
हंस पे सवारी कर
वीणा की टंकार कर
सुष्मङ्कसेतु में वास कर
ज्ञान का प्रकाश कर
कुबुद्धि का तू नाश कर
सुबुद्धि को विस्तार दे
जय शारदे, जय शारदे!
तू कंठहरा, वागेश्वरि
माया तू ही प्रमेश्वरी
तू सुभ्रवस्त्रा, निरंजना
कवि,मुनि मन रंजना
अशुभ हर,शुभ कर
शुभङ्कसंकल्पों का वर दे
जय शारदे, जय शारदे
अज्ञानता के ताप से
जगतङ्कजन विलप से
छाया धरा पे अंधकार
हो रहा है चित्कार
चित्कार की पुकार सुन
तू ज्ञान का प्रकाश दे
जय शारदे, जय शारदे!
एक नया भूचाल सा
फैला है जग में विद्रूपता
कहीं द्रुयोधन विहंसता
रावण कहीं दहाड़ता
रो रही हैं द्रोपदियां
सिसक रही हैं सीतायें
तू कष्टहरा तू कष्ट हर
तू बलप्रदा तू बल दे
जय शारदे, जय शारदे!
दुर्गुणों का प्रचंड है
संस्कारों का मोल नहीं
स्वार्थ, लोभ मोह में
अहं,राग, द्वेष में
जनङ्कमन मलिन है,
कलाधरा तू विमला
दूर कर मनङ्कमलीनता
सृष्टि का श्रृंगार कर
कंठङ्ककंठ वास कर
वाणी को संवार कर
नव संस्कारों का धार दे
जय शारदे, जय शारदे!
तू सौदामिनी,सुधामूर्ति
सुभद्रा, सुरपुजिता
सुवासिनी, सुनासा तू
विनिद्र, पद्मलोचना
विद्यारूपा तू विद्या दे
जय शारदे, जय शारदे!

गिरि यादव, बागोडीह ,सरिया, झारखंड।

मैं खाली रस्ता

देखता हूँ साथी
मिलने तो आओ,
दरस दिखाओ
तेरे बिन सूना है
गली चौबारे
आँखों में आंसूँ है
पलकों पे तारे
जीना तुझी से है
मरना तुझी से है
तेरे बिन अब मेरा,
कौन है प्यारे
सन्नाटा फैला है
ये दिल अकेला है
चारों तरफ बस तेरे,
साए है यारा..
इक बात कहना है
संग तेरे रहना है
प्यासे मिटानी है ये
दिल का सारा...
सुन ले तू मेरी बातें
कैसे कटती है ये रातें
तड़पता दिल, तन्हाई में
जो तू है ना, परछाई में
मेरे साथी मेरे यारा,
तू साथ साथ रहना
तू दिल है मेरा और
मैं तेरा दीवाना...

-मनोज कुमार
यकता गोण्डा उत्तर प्रदेश

तुम गर्व हिन्दुस्तान पे करो

तुम गर्व हिन्दुस्तान पे करो।
मगर काम वैसा तुम ना करो।।
बर्बाद, बदनाम हो जिससे यह मुल्क।
कदम गलत राह पे तुम ना धरो।।
तुम गर्व हिन्दुस्तान---------।।

नसीब वाले हो तुम।
ऐसे आजाद हो तुम।।
नसीब है सब कुछ तुम्हें।
ऐसे आबाद हो तुम ।।
मगर इनका ताज नीचे ना करो तुम।
तुम गर्व हिन्दुस्तान----------------।।

कोई कितना बहकाये।
दौलत का लालच दिलाये।।
मगर बहकना नहीं तुम।
स्वर्ग जो यह जलाये।।
शहीदों के इस स्वर्ग को नीलाम ना करो तुम।
तुम गर्व हिन्दुस्तान---------।।

देशभक्त वो नहीं है।
इससे वफ़ा वो नहीं है।।
करते हैं सौदा जो वतन का।
निवासी वो इसके नहीं है।।
ऐसे लोगों का सम्मान तुम ना करो।
तुम गर्व हिन्दुस्तान---------------।।

गुरुदीन वर्मा उर्फ़ जी.आज़ाद, तहसील एवं जिला- बारां(राजस्थान)

नेताजी सुभाष चंद्र बोस...

तुम मुझे खून दो...,
मैं तुम्हें आज़ादी दूंगा...
इस तरह के नारा देकर,
समस्त हिंदुस्तानियों के,
खून खौला देने वाले
समस्त भारतवर्ष में...,
एकमात्र क्रांतिवीर
नेता सुभाष चंद्र बोस
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी ।
आज़ाद हिंद फौज़ की स्थापना में अग्रणी ।।
अपने मृत्यु को मुट्ठी में लेकर,
चलने वाला योद्धा ।
कई देशों को थर्रा देने वाला योद्धा ।।
दुश्मनों के सामने सिर न
झुकाने वाला वीर पुरुष ।
द्वितीय विश्वयुद्ध दौरान अंग्रेजों के
खिलाफ लड़ने वाला वीर
पुरुष ।।

क्रांतिवीर द्वारा दूसरे
क्रांति वीर को दी गई
अभूतपूर्व सलामी भारतवर्ष
युग युगांतर तक याद रखेंगे ।

वे कहां गए ...,
वे कहां रहे ...!
ये धूमिल अभी कहानी है ।
हमने तो उसकी कथा,
आज़ाद फ़ौज से जानी है ।।

हिंद, हिंदू और हिंदुस्तान के लिए
%जय हिंद% का नारा देकर
दुश्मन देश को ललकारने वाला
युगपुरुष नेता सुभाष चंद्र बोस को
शत-शत नमन ।
भारतवर्ष हमेशा ऋणी रहेगा उनका ।।

मनोज शाह मानस, नारायणा गांव, नई दिल्ली

राम नाम ही जीवन

सारे जहां में राम नाम है,
राम नाम से जीवन महान है।
प्रभु राम को पूजू सुबह शाम है,
निर्मल मन से प्रभु सारे जहां है।
राम से ही जीवन का आधार है,
राम नाम से ही यह संसार है।
राम रूप अवतरित कथा का सार है,
राम नाम जपने से जीवन उद्धार है।
राम से चली सदा रघुकुल रीत है,
राम से खिल उठेंगे नवल प्रीत है।
नेक विचारों से जीवन समाहित है,
राम नाम चारों ओर प्रभावित है।
राम नाम से जीवन का शुरुआत है,
राम के गुणों को दिलों में छाई प्रभात है।
राम नाम जपता रहूं दिन व रात है,
राम के शरण में नहीं जात-पात है।
राम नाम से कलयुग का जीवन है,
राम का करूं सदा भजन कीर्तन है।
राम ही विष्णु राम का सुदर्शन है,
प्रभु श्री राम का जीवन मात्र दर्शन है।

नरेश कुमार दुबे, सरायपाली जिला महासमुंद छत्तीसगढ़

सिर करे सजदा वाहेगुरु

सिर करे सजदा वाहेगुरु के द्वार,
जहाँ मिट जाता है हर अहंकार।
न मैं बड़ी, न मैं छोटी रहूँ,
तेरे नाम में खुद को खोती रहूँ।
वाहेगुरु–शब्द नहीं, विश्वास हो तुम,
डर में भी जो दे आश्वास, वो तुम।
टूटे हौसलों को जो जोड़ ले धागे में,
वो तेरी ही कृपा है हर एक सांस में।
जब आँखें थक जाएँ दुनिया की चाल से,
मन सुकून पाए तेरे ख्याल से।
न माँगा कुछ, न कोई सवाल रखा,
बस तेरे आगे सिर बेहाल रखा।
नेहा कहे–मेरी जीत भी तुम, हार भी तुम,
मेरे हर उत्तर, हर सवाल भी तुम।
सिर करे सजदा, दिल गाए बस यही–
वाहेगुरु, वाहेगुरु, तू ही सही।

नेहा कुमारी

लड़की दोस्त है अपना..!!

लड़की दोस्त है, इसमें कोई इश्क़ का क़िस्सा नहीं,
ये साथ है समझदारी का, कोई अधूरा सपना नहीं।
बातों में हँसी भी है, तकरार की गुंजाइश भी,
मगर हर एक लफ़्ज़ में अदब है, कोई छलना नहीं।
वो मेरी ज़िद नहीं बनती, न मैं उसकी मजबूरी,
दो आज़ाद सोच के राही हैं, कोई रिश्ता बोझा नहीं।
वो अपने ख़्वाब सजाती है खुले आसमानों में,
मैं अपने रास्तों पर हूँ, किसी की छाया नहीं।
न आधी रात की कसमें, न झूठे इज़हार-ए-दिल,
ये दोस्ती है जनाब, कोई बिकता सौदा नहीं।
कभी वो सच कहे बेधड़क, कभी मैं ख़ामोश रहूँ,
यहाँ जीत-हार तौलने का कोई तराज़ू नहीं।
ज़माना शक की नज़र से हर रिश्ते को देखता है,
मगर हर पास बैठा चेहरा मोहब्बत होता नहीं।
हम उस नई पीढ़ी के लोग हैं जो सीख रहे हैं अब,
कि साथ होना क़ैद नहीं, और दूरी गुनाह नहीं।
न उसका होना मेरी पहचान, न मैं उसकी मंज़िल,
ये रिश्ता साथ चलने का है, कोई सहारा नहीं।
मुसीबत में जो हाल पूछे, वही सबसे क़रीबी,
हर रोज़ पास होने से कोई अपना होता नहीं।
अगर कल वक़्त ने हमको अलग राहों में बाँटा,
तो इसमें टूटने जैसा कोई अफ़साना नहीं।
ये दोस्ती भी एक तहज़ीब है, नई सदी की ज़ुबान,
जहाँ चाहत तो है मगर हक़ जताना नहीं।
लड़की दोस्त है–बस इतनी सी पूरी सच्चाई,
हर दिल के रिश्ते को बदन से जोड़ना ज़रूरी नहीं।
राज़ इतना ही कहेगा इस शोर मचाते जहाँ से,
युवा पीढ़ी है साहब, इसे पुरानी सोच से तौलना नहीं।

- प्रिंस राज भागलपुर (बिहार) 7667080621

सुरता करन वीर जवान ल

आजादी के खातिर जेन,दे दीस अपन परान ल.!
आवव संगी सुरता करन,ऐसन वीर जवान ल..!!
घर दुवार ला छोड़ ,भारत भुइयाँ के गुन गाथे..!
सरदी,गरमी,बरसा सहिके,दुसमन ल मार भगाथे..!!
भारत भुइयाँ के माटी म,आँच नइ आंवन देवय!
गोली खाथे छाती म,तिरंगा ल झुकन नइ देवय!!
दाई ददा के इकलौता बेटा, देस के काम आइस हे.!
आजादी बर लड़िस लड़ाई ,अपन लहूँ बोहाइस हे!!
लहूँ देके जेन हर अपन,भुइयाँ के मान बढ़ाइस हे!
अंग्रेज मन ल धुररा चटाके,देस आजाद कराइस हे!
आजादी के लड़ाई म संगी,कतको मुढ़ी कटाइस हे
तभे जाके भारत भुइयां,आजाद भारत कहलाइस हे

प्रीतम कुमार साहू,गुरुजी, लिमतरा,धमतरी,(छ.ग)

दोहे

कहने को अपने सभी, मन से ना स्वीकार।
देख अवसर लोग यही, कितने करे प्रहार।।
मन में जिनके द्वेष है, उचित कहाँ व्यवहार।
जाने यह कोई नहीं, इनका यह अधिकार।।
जीवन यह संघर्ष भरा, लगते सब लाचार।
समय रहे समझे इसे, करें ज्ञान विस्तार।।
सर्दी गर्मी बरसात तो, रहते नहीं समान।
देख इन्हें जो सीख ले,पाए हाथ कमान।।

शिवलाल दाँगी,अध्यापक, मोबा.8435408794

जन्मदिन

जन्मदिन की बहुत-बहुत मुबारकबाद।
खुशियों के मौसम में रहे आप आबाद।
आपके हिस्से में न आए ग़म के ख़ार।
साहित्य में हो आपकी जय जयकार।
परिवार में रहे सुख शांति का वास।
माँ शारदे का रहे हृदय में निवास।
आँखों में भरा रहे आशा का समंदर।
पावन बना रहे आपका मन मंदिर।

फूलों से खिला रहे आपका बाग़।
आपकी अंधेरी राहों में जले चिराग़।

रोज़ निकले आपकी क़लम से गीत।
क़दम क़दम पर हो आपकी जीत।
÷विवेक÷ करता है ईश्वर से प्रार्थन।
संकटों से न हो आपका सामना।
उम्रदराज़ की जिए आप ज़िंदगानी।
बेमिसाल लाजवाब बने आपकी कहानी।

विवेक शर्मा

अपाहिज

फूल खिला खिलकर झर गया
इसका मतलब यह नहीं कि
पौधा मर गया।
पौधे !
तू फूल गिरने पर
अफसोस मत कर
कौन किसके साथ है कयामत तक गया।
सबको मिला है सबको मिलेगा
इस जहां में मुकद्दर का लिखा
कहीं फुल टूटा तो कहीं कांटा निखर गया।
रागिनी मुकद्दर की
बजती रहेगी कयामत तक
गया तो नसीब ही सिर्फ कयामत तक गया ।
पहलू में आए
सुख-दुख समेट लो अपने दामन में
कोई यह न जान सका है
कब किसका दामन बिखर गया ।
अपाहिज है जमाना दर्द
अपाहिज है जमाने वाले
है कौन अपनी टांगों से
अपनी कब्र तक गया।।

अशोक दर्द डलहौजी चंबा हिमाचल प्रदेश

जीवन ज्योति

देवी है मां सबकी मैया है
मां तेरी शरण में आया हूं ।
शारदे मां है सरस्वती है मां
अज्ञानी दरबार में आया हूं ।

ज्ञान का दीप जला देना
मां अज्ञानी बालक हूं ।
कुछ थोड़ा ज्ञान मुझे दे
पूजा अर्चना करता हूं ।

जीवन में अंधकार सामने
इस अज्ञानी की सुन लेना ।
भर दे रोशनी मन में मेरे
प्रकाश का दीप जला देना ।

जीवन ज्योति जले ये जब तक
मन में मेरे उजियारा कर दे ।
जीवन में खुशियां भर देना
सबके मन में खुशियां भर दे ।

जीवन है अनमोल सभी का
बच्चों को खुशियां दे देना ।
बिना ज्ञान अधूरा जीवन
मैया भक्ति भाव जगा देना ।

शक्ति की मैया तूं दाता है
मैया शक्ति भी दे देना ।
कठिन राह जीवन की है
भक्ति की शक्ति दे देना ।

नमन वंदन प्रणाम करते हैं
स्वीकार करो ये मैया मेरी ।
भक्ति भाव समर्पण से ही
मैया पूजा भजन करूं तेरी ।

डा अनन्तराम चौबे
अनन्त, जबलपुर

इस नदी के किनारे

इस नदी के किनारे तितली की तरह
अपने पाल फैला कर कतार में खड़ी हैं
कुछ नौकाएं चुपचाप ।
चंचल कमलों के बीच
खड़े हुए हैं कुछ खामोश
बगुले
किसी अनहद नाद में डूबे हुए
किसी योगी की तरह।
रंग-बिरंगे बादलों वाला आसमान
नहाने के लिए उतरता हुआ
मालूम होता है इस गहराई में ।
लेकिन सबसे दूर निर्लिप्त नदी
बह रही है बह रही है उन्मुक्त, अनवरत ।

- विकास कुमार शर्मा, शिवपुरी - बी, गंगापुर सिटी (राजस्थान)

एक पत्नी के जिंदा रहते हुए भी

एक पत्नी के जिंदा रहते हुए भी
अक्सर लोग औरों के साथ इश्क़ लड़ाते हैं
आजकल सब कॉमन है ये कहकर
खुद के साथ औरों को दिलासा दिलाते हैं

त्याग प्रेम वफा सब पुराने चोचले हैं
हर शखुस को यही बताते हैं
चल रहे हैं मेरे कितने अफेयर
दोस्तों को आज गर्व से बताते हैं

शादी के लिए पत्नी भी सुंदर चाहिए
बदसूरत को लेकिन गले लगाते हैं
दहेज में मिली गाड़ी तो पसंद है
पर पत्नी में हजार खामियां गिनाते हैं
न डरते हैं माता पिता से
अब
गलतियों पर भी पर्दा डाल
जाते हैं
अपनी ही गलतियों को
सरेआम
आज औरों की भूल बतलाते हैं

वर्षा वार्ष्णेय अलीगढ़

बोला मुझसे चाँद

राष्ट्र का अर्थ नहीं होता,
केवल कोई सरकार।
मातृभूमि के प्रति जगाए,
प्रेम यह शाब्दिक-बयार।।1

आज देश में लोग कितने,
करें स्वदेश का समर्थन।
सब सत्ता-लोलुप हो घूमें,
धनी हो या कि निर्धन।।2

शिक्षा - दीक्षा भूल सभी,
अपनी - अपनी ही हाँकें।
वैर-द्वेष में फँसे पड़े सब,
बन छैल - गाबरु बाँके।।3

चित्र-चरित्र स्थिर न कोई,
दीखें आज सभी व्याकुल।
ज्यूँ क्रूर - काल फंदे में,
फँस रह गईं सभी बुलबुल।।4

बैठा मैं एकाकी छत पर,
न हलचल न कूद-फाँद।
तभी लपक हाथ मिलाने,
आ पहुँचा वहाँ पर चाँद।।5

उसको आया देख उचक कर,
आगे बढ़ मैंने हाथ मिलाया।
आज अचानक कैसे आये,
संदेस भी नहीं भिजवाया।।6

चंदा का मन दुखी बड़ा था,
बोला,%सुन,मेरी अक्षय बात।
घिरी हुई है देश पर तेरे,
घातक राजनीतिक - रात।।7

कान पास ला सुन भेद,
कहीं सुन न ले दीवार।
कंधे पर यहाँ लट्ठ धरे,
घूमा करते हैं पहरेदार।।8

हट्टे - कट्टे चोर हैं इनके,
सब ही तो शागिर्द।
सन्नाटे में क्यों सिमटा बैठा,
समस्याएँ तेरे इर्द - गिर्द।।9

क्या बतलाऊँ चंदा मामा,
मन मेरा बहुत विचलित है।
भ्रष्टाचारियों की पौ - बारह,
मंत्री जी भी *विगलित हैं।।10
*पतित

चुने गए चोरों के द्वारा,
मंत्रियों के मुँह यूँ बंद हैं।
स्वार्थ में डूबी हुई जनता भी,
कहो कौन-सी अक्लमंद है।।11

भ्रष्टाचार के सुलभ - तंत्र ने,
सबके बढ़ा दिए चौगुने चाव।
मन - मसोस कोने में जा बैठा,
यूँ लुढ़का सदाचारी का भाव।।12

आधुनिकता के नाम पर देखो,
पाखंडी बन बैठे उत्स्वधर्मी।
देखो आज बाजार झाँक कर,
बिक रही है महंगी बेशर्मी।।13

रातभर ताक-झाँक कर मामा,
अंततः तुम भी हो अकुलाते।
तुम कौन शातिर से कम हो,
कभी-कभार सुध लेने आते।।14

देवासुर - संग्राम छिड़ा है,
है धरती बेचारी भयभीत।
किस-किससे वह लाड़ लड़ाए,
नहीं किसी को उससे से प्रीत।।15

अक्षय राज शर्मा, हरियाणा

दुःख और ईमान

दुःख इस बात का है
कि अच्छा करके सिर्फ
गाली खाता है।

दुःख इस बात का है
कि दुसरो की मदद
करके सिर्फ
बदनामी खाता है।

दुःख इस बात का है
कि चुगली करके
सम्मान पाता है।

दुःख इस बात का है
कि चापलूसी से
इज्जत पाता है।

समाज बेआबरू है
गुरु, चेला भी हाराम
का खाता है।

सचेत हो जाओ
हे मानव ईमान
सदा साथ जाता है।

नरेन्द्र नन्द, धमतरी,छत्तीसगढ़

मोबाइल युग के महामारी

बघेली कविता
मोबाइल के ज़माना मा ठेंगा होइगा लाइक और इरंटी-बिरंटी होइगा गुड लक, सब कुछ सिमटी गा इमोजी मा।
बगल के काका कहें अपने बेटवा से पढ़-लिखी ले बेटवा, आगे ईहै तोका काम देई कमाये ख़ातिर रोज़ी मा।।
अब लड़िका-लड़की के साथ मा बागब आम भा, पढ़े-लिखे के उम्र मा ऊ सब लगे हैं रील्सबाज़ी मा।
हमार मरज़ी हमार जिन्नगी तर्ज़ वाले लड़िकन के, अब केहू न टोके कि फलाने के लड़िका बिगड़ी जई आवाराबाज़ी मा।।
रील्सवीर लड़िका बस लगे हैं नखरेबाज़ी मा, मोडिफाई बाइक पर स्टंट देखाई के पड़े हैं फ़ालतू के नारेबाज़ी मा।
%आई लव यू% वन फोर थ्री मा सिमटी गा, भाषा-बोली बदली गै कोड वर्ड और जेस्चर के इशारेबाज़ी मा।।
ड्रामेबाज़ रील्सवीर लड़िका छोट-बड़ा के लिहाज़ बिसरी गैं, गुंडा बनिके फिरत हैं देखावेबाज़ी मा।
सब संस्कृति बिसरी गैं घुटना छुअब गोड़े गिरब होइगा, बड़े-बुज़ुर्ग कहत हैं आगी लागै अइसन मार्डनबाज़ी मा।।
अब के फर्टिलाइज़र से सब खाना के स्वाद नष्ट होइगा, अब ऊ मज़ा न आवै जोन्हरी के रोटी अउर चना के भाजी मा।
ई विज्ञापन के दौर मा, सब मिलीभगत से काम चलत ला है धोखेबाज़ी मा।।
नेता लगे हैं प्रोपोगेंडाबाज़ी मा, जनता अपने हक के बात बिसरी गै ई राजनीती के जालसाज़ी मा।
चंदा-पासा अउर सब शारीरिक व्यायाम वाले खेल हेराई गैं, सब लगे हैं मोबाइलबाज़ी मा।।
स्नेहिल के बाबूजी कहत हैं ई ज़माना मा हवा ज़्यादा जहरीली होत ला ही, बेटा अब पटाख़ा न खरीदे कबहुं दिवाली मा।
ई ज़माना मा काज-ब्याह के आधुनिकीकरण देख लिहन, अब ऊ शरम-लिहाज़ नहीं रही गा दुल्हा-दुल्हन और साली मा।।

देवनंद यादव 'देव स्नेहिल' सीधी

नया साल

नये साल की नयी सौगात मुबारक हो आपको,
जो चाहो वो हर खुशियां मिले आपको।
अगर ग़म जो मिले आपको तो वो ग़म मुझे मिले,
हजारों खुशियां मिले आपको।
कहीं रास्ते में कांटे मिले तो वो कांटे मुझे मिले,
फूलों की गालियां मिले आपको।
जिंदगी में अगर रोना पड़े तो आंसू मुझे मिले,
नाज़ुक सी मुस्कान मिले आपको।
अगर मिले तन्हाई तो वो तन्हाई मुझे मिले,
खुशियों से भरी महफ़िल मिले आपको।
गर कोई खाता हो गई आपसे तो उसकी सजा मुझे मिले,
हसीन तोहफ़ा मिले आपको।
जलना पड़े धूप में तुझे तो वो धूप मुझे मिले,
खूबसूरत बगीचों का छांव मिले आपको।
आशियाना अगर तुझे न मिले तो वो मिले मुझे,
सपनों का महल मिले आपको।
तेरे ख़्वाब न हो पूरे तो अधूरे ख़्वाब मुझे मिले,
ख्वाबों का शहर मिले आपको।
तेरी अधुरी सांसे हो तो वो मुझे मिले,
मेरी उम्र भी मिले आपको।
यही कामना शिवजी से करते हैं,
2026मुबारक हो आपको।

जी. एस. राठौर, पेंड्रा रोड, जी.पी.एम.

हैं अलौकिक तेज सा

है अलौकिक तेज सा, ईश्वर दिव्य सरूप।
आभा शोभा है लिए, लगता बहुत अनूप।।
पावन माला हाथ में, करें ईश गुणगान।
रमें राम में जो सदा, पुलकित मन से मान।
रग रग में जिस के वसा, राम राम का नाम।
मन चिंतन में ही रहे, सदा राम का धाम।
सत्य डगर पर जो चले, हरिश्चंद्र सा भूप।।
है अलौकिक तेज सा, ईश्वर दिव्य सरूप।
माथा भरा ललाट हो, बहे नैन से नूर।
काम क्रोध मद लोभ अरु, रहे मोह से दूर।
ऐसे ज्ञानी लोग ही, बिरले मिलें सुजान।
लगे अलौकिक देव सा, कोई पुरुष महान।
देख तृप्त मन को करे, ऐसा पावन रूप।
है अलौकिक तेज सा, ईश्वर दिव्य सरूप।।
करनी कथनी से लगे, गुरुमुख की पहचान।
झूठ कपट से हो रहित, देव तुल्य इंसान।
रहा सत्य पथगामिनी, रखता उच्च विचार।
मधुर कंठ के बोल हो, उत्तम हो व्यवहार।
संग राम के वह चले, छोड़ काल के कूप।
है अलौकिक तेज सा, ईश्वर दिव्य सरूप।।

शिव राज सन्याल, मकड़ाहन ज्वाली कांगड़ा हि.प्र

निर्बल की तुम ढाल बनना

दीन के दुख आप हरना,निर्बल की तुम ढाल बनना।
हाथ ले के साथ साथी, राह में हर हाल बनना।।
कौन होता आज साथी, देख ली है दुनिया सारी,
आज मतलब के सभी हैं, यार मतलब सार यारी।
है भरोसा नाज तुम पर, गैर की मत चाल चलना।
दीन के दुख आप हरना,निर्बल की तुम ढाल बनना।।
दर्द दिल से बांट लेना, साथ पल दो भी निभाना।
कौन आता कौन सुने ले, है नहीं अब वो जमाना।
तुम सदा ही पास रह के, धैर्य दे खुश हाल बनना।
दीन के दुख आप हरना,निर्बल की तुम ढाल बनना।।
लाज रक्षा नार की अब, मात बेटी आप जानो।
सब यहाँ हैं एक जाई, आप सब को एक मानो।
लाज बचाना फर्ज समझो, कष्ट में महिपाल बनना।
दीन के दुख आप हरना,निर्बल की तुम ढाल बनना।।

मान तुम हो देश का अब, देश की यह शान तुम हो।
वीर भारत मात के हो, देश की पहचान तुम हो।
जान अपनी यह लुटा कर, देश के तुम भाल बनना।
दीन के दुख आप हरना, निर्बल की तुम ढाल बनना।

शिव राज सन्याल, मकड़ाहन ज्वाली कांगड़ा हि.प्र